International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत किशोरियों (13–17 वर्ष) के व्यक्तित्व का अध्ययन (मध्यप्रदेश के खंडवा शहर के विशेष संदर्भ में)

शोधार्थी – **सुश्री अनुराधा बरुड़**, समाज विज्ञान अध्ययन शाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

शोध निर्देशिका – **प्रो. डॉ. मोहिनी सकरगायें**, सेवानिवृत्त सह-प्राध्यापक, माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय कन्या महाविद्यालय, खंडवा

सह-शोध निर्देशिका – **प्रो. डॉ. सुषमा शर्मा**, सेवानिवृत्त सह-प्राध्यापक, माताजीजीबाई शासकीय कन्या महाविद्यालय, इंदौर

शोध-सारांश

किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण काल माना जाता है। इस अवस्था में किशोर न तो बालक रह जाता है और न ही पूरी तरह वयस्क होता है। प्रस्तुत अध्ययन में किशोरियों के व्यक्तित्व को समझने तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि विद्यालय का वातावरण उनके व्यक्तित्व को किस प्रकार प्रभावित करता है। किशोरावस्था जीवन का ऐसा काल है, जब किशोर-किशोरियाँ अनेक उलझनों और समस्याओं से गुजरते हैं। शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन तथा व्यवसाय-संबंधी समस्याएँ आदि उनके व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। ऐसे में यदि उन्हें परिवार, पड़ोस, सहपाठियों और विद्यालय से उचित सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है तथा उनमें सकारात्मक सोच विकसित होती है, तो उनका व्यक्तित्व बेहतर रूप से विकसित हो सकता है।

प्रस्तुत शोध में शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरियों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह समझने में सहायता मिली कि विद्यालय का वातावरण तथा शिक्षकों का व्यक्तित्व भी विद्यार्थियों को प्रभावित करता है। विद्यार्थी विद्यालय में अपने शिक्षकों के साथ लंबे समय तक रहते हैं; इसलिए व्यक्तित्व-निर्माण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षकों द्वारा दिया गया सकारात्मक ज्ञान एवं मार्गदर्शन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-विकास में सहायक होता है।

शब्द-कुंजी – व्यक्तित्व, अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी, किशोरावस्था

1. प्रस्तावना

व्यक्तित्व व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है, जो उसकी आदतों, रुचियों और गुणों के आधार पर निर्मित होता है। इसी कारण उसके व्यक्तित्व में अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा भिन्नता दिखाई देती है। व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर निहित गुणों तथा बाहरी वातावरण से सीखी गई बातों का संगठित रूप होता है। व्यक्तित्व का निर्माण जन्म से प्रारंभ होकर जीवनभर चलता है। इसके निर्माण में पारिवारिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, संस्कृति और परिवेश आदि सभी की भूमिका होती है। व्यक्तित्व का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसकी सहायता से व्यक्ति के व्यवहार को समझा जा सकता है। विशेष रूप से किशोरावस्था में बालक अनेक संवेगात्मक, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समस्याओं से गुजरता है। इस अवस्था में उसके व्यक्तित्व के स्वरूप और विकास को समझना उपयोगी होता है।

2. व्यक्तित्व का अर्थ

"व्यक्तित्व"लैटिन भाषा के "पर्सोना"शब्द का हिन्दी रूपांतरण है| जो अंग्रेजी के personality से लिया गया है,जिसका अर्थ है,"मुखौटा" पर्सोना एक पोशाक को कहा जाता था जिसे पहनकर यूनानी लोग नाटक करते थे एवं वह पात्र जिसका अभिनय करना है बनते थे |लेकिन पर्सोना केवल व्यक्ति के बाहरी स्वरूप को दर्शाता है इसका व्यक्ति के आंतरिक गुणों से कोई संबंध नहीं होता है |

3. व्यक्तित्व की परिभाषाएँ

1. राजकुमार मार्टन – "व्यक्तित्व व्यक्ति के जन्मजात तथा अर्जित स्वभाव, मूलप्रवृत्तियों, भावनाओं तथा इच्छाओं आदि का समुदाय है।"
2. वारेन – "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है, जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।"
3. रेक्स रॉक – "व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का संतुलन है।"
4. ऑलपोर्ट – "व्यक्तित्व का संबंध मनुष्य की उन शारीरिक तथा आंतरिक वृत्तियों से है, जिनके आधार पर व्यक्ति अपने वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करता है।"

4. व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक

व्यक्तित्व-विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है। किसी भी व्यक्ति के विचारों, भावनाओं, अभिवृत्तियों एवं प्रतिक्रियाओं के निर्माण में पर्यावरणीय तथा जैविक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

1. **वंशानुक्रम** – व्यक्ति के व्यक्तित्व में वंशानुक्रम का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बुद्धि, शारीरिक गुण और स्वभाव आदि आनुवंशिक रूप से माता-पिता से प्राप्त होते हैं।
2. **पारिवारिक वातावरण** – परिवार का वातावरण बालक के व्यक्तित्व-विकास का आधार होता है। परिवार से मिलने वाला प्रेम, सहानुभूति, पालन-पोषण और जीवन-शैली व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।
3. **सामाजिक वातावरण** – बालक जिस समाज में रहता है, वहाँ की परंपराएँ, रीति-रिवाज, मूल्य एवं सामाजिक संपर्क उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं।
4. **विद्यालय** – बालक के व्यक्तित्व को विद्यालय का वातावरण भी प्रभावित करता है। विद्यालय तथा शिक्षकों का प्रोत्साहन बालक के सकारात्मक व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होता है।
5. **संस्कृति** – बालक के व्यक्तित्व पर संस्कृति का भी प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक समाज के कुछ रीति-रिवाज एवं परंपराएँ होती हैं, जिनके अनुरूप व्यक्ति को जीवन-निर्वाह करना पड़ता है। संस्कृति से असंगत व्यवहार करने पर व्यक्ति को तनाव का सामना करना पड़ सकता है तथा सामाजिक समायोजन में कठिनाई हो सकती है।
6. **मित्र-मंडली** – विद्यालय में अध्ययन के दौरान मित्रों और साथियों का प्रभाव भी व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। जिन बालकों को अपने सहपाठियों का समर्थन मिलता है, उनका विकास उचित रूप से हो सकता है। इसके विपरीत, उचित समर्थन न मिलने पर वे अकेलापन अनुभव कर सकते हैं।

5. शोध की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में हमारे आसपास का भौतिक एवं सामाजिक वातावरण तेजी से परिवर्तित हो रहा है। व्यक्ति सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन चाहता है, किंतु कई बार उचित-अनुचित का विवेक प्रभावित हो सकता है। आज के किशोर-किशोरियाँ भी इस परिवर्तनशील वातावरण से प्रभावित हो रहे हैं। उनके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा, इसे समझना कई बार कठिन हो जाता है। व्यक्तित्व हमारे आंतरिक एवं बाह्य जगत से अर्जित गुणों का समावेश होता है। इस शोध से शासकीय विद्यालयों की किशोरियों के व्यक्तित्व को समझने तथा विद्यालयी वातावरण के प्रभाव पर विचार करने में सहायता मिलती है।

6. शोध-साहित्य का पुनरावलोकन

1. **टेनन हॉवर्ड (2022)** – अपने शोध-अध्ययन में उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के व्यक्तित्व में अंतर पाया। उनके अनुसार व्यक्तित्व में लिंग के आधार पर अंतर होता है, किंतु सांख्यिकीय मध्यस्थता विश्लेषण शून्य थे।
2. **विभाष कुमार एवं रिया दुदानी (2021)** – उनके शोध-अध्ययन में व्यवहार-संबंधी पूर्वाग्रहों (झुंड व्यवहार, पूर्वाग्रह, अति-आत्मविश्वास तथा हानि-विचलन पूर्वाग्रह) और व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख लक्षणों के बीच संबंध बताया गया है।
3. **अली इमरान (2019)** – व्यक्तित्व को समझने के लिए पाँच लक्षणों का उपयोग करते हुए पाकिस्तान के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कार्यकारी मास्टर एवं पीएच.डी. स्तर के 613 विद्यार्थियों के आँकड़े एकत्र किए गए। अध्ययन में बहिर्मुखिता, सहमतता, कर्तव्यनिष्ठा तथा सकारात्मकता का व्यक्तित्व पर प्रभाव पाया गया। व्यक्तित्व में नवीनता लाने के लिए खुलेपन को भी आवश्यक बताया गया।

7. अनुसंधान के उद्देश्य

1. किशोरियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
2. व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

8. परिकल्पना

किशोरियों के व्यक्तित्व में भिन्नता पाई जाएगी।

9. शोध-विधि

प्रस्तुत शोध विषय "शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत किशोरियों के व्यक्तित्व का अध्ययन" हेतु व्यक्तित्व-मापनी के माध्यम से अध्ययन किया गया। शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में व्यक्तित्व-मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों को आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर व्यवस्थित कर वर्णनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार अध्ययन में व्यक्तित्व के प्रकारों का संख्यात्मक विवरण तथा उनकी व्याख्या दोनों सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोत के रूप में पत्र-पत्रिकाओं, जर्नल, शोध-ग्रंथ आदि को शोधकार्य हेतु शामिल किया गया।

10. निदर्शन

दैव निदर्शन की लॉटरी विधि द्वारा 100 छात्राओं का चयन किया गया, जो शासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत थीं। अध्ययन में चयनित किशोरियों की आयु 13 से 17 वर्ष के बीच थी।

11. आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

किशोरियों के व्यक्तित्व-मापन के पश्चात व्यक्तित्व के प्रकार निम्नानुसार प्राप्त हुए।

तालिका 1 : किशोरियों के व्यक्तित्व का आयु-वार वितरण

क्रमांक	आयु (वर्ष)	आवृत्ति	अंतर्मुखी	बहिर्मुखी	उभयमुखी
1	13	20	1	2	17
2	14	20	0	6	14
3	15	20	1	2	17
4	16	20	2	2	16
5	17	20	1	4	15
योग	—	**100**	**5**	**16**	**79**

स्रोत: प्रस्तुत अध्ययन में व्यक्तित्व-मापनी के आधार पर संकलित प्राथमिक आँकड़े।

उपरोक्त तालिका के आधार पर कहा जा सकता है कि कुल 100 किशोरियों में 5 प्रतिशत किशोरियाँ अंतर्मुखी, 16 प्रतिशत बहिर्मुखी तथा 79 प्रतिशत किशोरियाँ उभयमुखी व्यक्तित्व की पाई गईं। आयु-वार वितरण में प्रत्येक आयु-वर्ग की 20 छात्राएँ सम्मिलित थीं।

आँकड़ों के अनुसार उभयमुखी व्यक्तित्व वाली किशोरियों की संख्या सर्वाधिक (79 प्रतिशत) है। इसके बाद बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली किशोरियाँ 16 प्रतिशत तथा अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाली किशोरियाँ 5 प्रतिशत हैं।

12. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित छात्राओं में उभयमुखी व्यक्तित्व सर्वाधिक पाया गया। इसकी विशेषता यह है कि ऐसे व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार अपनी भावनाएँ व्यक्त कर सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर शांत भी रह सकते हैं। यह व्यक्तित्व अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी—दोनों प्रकार के व्यक्तित्व की विशेषताओं का मिला-जुला रूप होता है। अध्ययन में बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम तथा अंतर्मुखी व्यक्तित्व वाली छात्राओं का प्रतिशत सबसे कम पाया गया।

13. सुझाव

व्यक्तित्व व्यक्ति का एक गुण है; कोई भी व्यक्तित्व अपने-आप में खराब नहीं होता। व्यक्तित्व-निर्माण में आसपास का वातावरण, विद्यालय तथा शिक्षकों का व्यवहार आदि कारक प्रभाव डालते हैं। इसलिए आवश्यक है कि व्यक्ति समाज एवं उपलब्ध अन्य साधनों से सही और सकारात्मक सोच अपनाए। विद्यालय तथा परिवार को किशोर-किशोरियों के व्यक्तित्व-निर्माण में बचपन से ही सहयोग प्रदान करना चाहिए, ताकि उनका व्यक्तित्व विकसित हो और वे समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध हों

संदर्भ-ग्रंथ

1. परमजीत कौर, गीता विश्वविद्यालय, पानीपत, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय।
2. भाई योगेंद्रजीत, बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास, नवीनतम संस्करण, पृष्ठ 278।
3. बर्मन, गायत्री एवं जैन, शशीप्रभा (2003), "किशोरावस्था, विवाह एवं परिवार", प्रथम संस्करण, शिवा प्रकाशन, इंदौर।
4. डॉ. वृंदा सिंह (2012), "किशोरावस्था: समस्या और समाधान", मंथन पब्लिकेशन, जयपुर।